

विचार बिन्दु

त्याग से पाप का मूलधन चुकता है और दान से ब्याज। –विनोबा

त्योहारी सीजन में बाजार को मिली संजीवनी : साइबर क्राइम भी चरम पर

देश में त्योहारी सीजन का आगाज हो चुका है। आगामी दिनों में एक के बाद एक त्योहार आने हैं। उम्मीद की जा रही है इस बार बाजार में दीपावली तक बेहतर रौनक बनी रहेगी। नवरात्रि और दशहरे पर जिस तरह से विभिन्न प्रकार की चीजों की बिक्री से बाजार गुलजार हुआ है उससे साफ अंदाजा लगा सकते हैं कि आने वाले सभी त्योहारों पर खरीदारी के लिए ग्राहक मन बना चुके हैं। इसी के साथ कारोबार ने रफ्तार पकड़ ली है। लोग खरीदारी के लिए बाजारों में पहुंच रहे हैं। दुकानें ग्राहकों से गुलजार होने लगी हैं। बाजारों में चहल पहल व भीड़-भाड़ देखने को मिल रही है। ऑनलाइन शॉपिंग की तरफ लोगों का रुझान बढ़ा हुआ है। माह सितम्बर 2०26 में जीएसटी संग्रह दो लाख तीन हजार करोड़ रुपये से अधिक पहुंचने और अर्थव्यवस्था में सुदृढ़ीकरण के संकेत के साथ देश में नवरात्रा से त्योहारी सीजन का आगाज हो गया है। जो कारोबार के लिए उत्साहजनक संकेत कहा जा सकता है।

त्योहारी सीजन घोखे और ठगी से अछूते नहीं है। साइबर क्राइम भी चरम पर है। आये दिन लोगों के बैंक खातों से पैसे निकल जाने की घटनाओं में वृद्धि हो रही है। चोर उन्चके भी त्योहारी सीजन का इंतजार करते हैं। लोग त्योहार की खरीददारी में व्यस्त हो जाते हैं तो ऑनलाइन ठग भी अपनी कारिस्तानी से बाज नहीं आते जिसमें न चाहते भी लोग थोड़े से लालच में आकर फंस जाते हैं। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार साइबर अपराध एक ऐसा अपराध है जिसमें अवैध गतिविधियाँ इंटरनेट या कंप्यूटर के माध्यम से की जाती हैं। वर्तमान समय में साइबर अपराध सबसे तेजी से बढ़ने वाले अपराधों में से एक है। इसका प्रभाव किसी व्यक्ति, और वहीं तक कि पूरे देश पर भी पड़ सकता है। साइबर अपराध के कारण आर्थिक नुकसान, मानसिक तनाव और निजी जानकारी के दुरुपयोग जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसलिए कहा जाता है सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी। इसी दुर्घटना से बचने के लिए समझदारी और सजगता की जरूरत है।

नवरात्रि से लेकर दीपावली तक देशभर में कुल व्यापार 7 लाख करोड़ रुपये से अधिक पहुंचने का अनुमान है। व्यापारियों के संगठन कॉन्फेडरेशन ऑफ़ इंडिया ट्रेडर्स (केट) के मुताबिक, पिछले साल की तुलना में इस बार कारोबार में 15 से 18 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हो सकती है। त्योहारी खरीदारी में तेजी, ग्राहकों की बढ़ती मांग और ग्रामीण व अर्ध-शहरी क्षेत्रों में व्यावसायिक गतिविधियों का विस्तार इस वृद्धि के प्रमुख आधार हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक त्योहार के सीजन में लगभग 7० करोड़ ग्राहक बाजारों में खरीदारी करते हैं और जहां 5०0 रुपये या उससे कम खरीदारी करने वाले लोग हैं वहीं हजारों और लाखों रुपये खर्च करने वालों की भी कमी नहीं है और इसीलिए देश में त्योहार के इस सीजन को महत्ता व्यापार की दृष्टि से बेहद ही महत्वपूर्ण है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार त्योहारी कारोबार का अनुमान विभिन्न राज्यों के व्यापारिक संगठनों, स्थानीय बाजारों से मिली जानकारी और खरीदारी के रुझानों के विश्लेषण पर आधारित है। पिछले साल त्योहारों के दौरान देश में करीब 6.०5 लाख करोड़ रुपये का कारोबार हुआ था। इसमें 5.4० लाख करोड़ रुपये के सामान को बिक्री और 65,००0 करोड़ रुपये की सेवाओं से होने वाली आय शामिल थी। इस साल कारोबार में संभावित बढ़ोतरी से खुदरा बाजारों, छोटे व्यापारियों और स्थानीय कारोबारियों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। त्योहारों के दौरान ग्राहकों की बढ़ती आवाजाही से बाजारों में बिक्री को गति मिल सकती है।

त्योहारों पर जिस तरह से विभिन्न प्रकार की चीजों की बिक्री से बाजार गुलजार हो रहा है उससे साफ अंदाजा लगा सकते हैं कि आने वाले सभी त्योहारों पर खरीदारी के लिए ग्राहक मन बना चुके हैं। लोग खरीदारी के लिए बाजारों में पहुंच रहे हैं। दुकानें ग्राहकों से गुलजार होने लगी हैं। बाजारों में चहल पहल व भीड़-भाड़ देखने को मिल रही है। ऑनलाइन शॉपिंग की तरफ लोगों का रुझान बढ़ा हुआ है। दुकानदारों का कहना है कि बाजार में बिक्री को गति मिल सकती है।

त्योहारों पर जिस तरह से विभिन्न प्रकार की चीजों की बिक्री से बाजार गुलजार हो रहा है उससे साफ अंदाजा लगा सकते हैं कि आने वाले सभी त्योहारों पर खरीदारी के लिए ग्राहक मन बना चुके हैं। लोग खरीदारी के लिए बाजारों में पहुंच रहे हैं। दुकानें ग्राहकों से गुलजार होने लगी हैं। बाजारों में चहल पहल व भीड़-भाड़ देखने को मिल रही है। ऑनलाइन शॉपिंग की तरफ लोगों का रुझान बढ़ा हुआ है। दुकानदारों का कहना है कि बाजार में बिक्री को गति मिल सकती है।

त्योहारों पर जिस तरह से विभिन्न प्रकार की चीजों की बिक्री से बाजार गुलजार हो रहा है उससे साफ अंदाजा लगा सकते हैं कि आने वाले सभी त्योहारों पर खरीदारी के लिए ग्राहक मन बना चुके हैं। लोग खरीदारी के लिए बाजारों में पहुंच रहे हैं। दुकानें ग्राहकों से गुलजार होने लगी हैं। बाजारों में चहल पहल व भीड़-भाड़ देखने को मिल रही है। ऑनलाइन शॉपिंग की तरफ लोगों का रुझान बढ़ा हुआ है। दुकानदारों का कहना है कि बाजार में बिक्री को गति मिल सकती है।

त्योहारी सीजन हालीकं महंगाई की मार से उपभोक्ताओं को राहतभर नहीं है। त्योहारी सीजन शुरू होने के साथ ही बाजार और ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइट्स पर ऑफर्स की भरमार देखने को मिल रही है। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत ने डिजिटल भुगतान में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। दुकानदार और ऑनलाइन कम्पनियाँ जहां इन त्योहारों में आकर्षक ऑफर तथा डिस्काउंट की पेशकश कर ग्राहकों को रिझाने का प्रयास करते हैं, वहीं ग्राहक भी इन आकर्षक ऑफरों का लाभ उठाकर जमकर खरीदारी करते हैं। महंगाई के दबाव के बावजूद इस बार नवरात्रि-दशहरे के त्योहारी सीजन में बाजार में खरीदारी का उत्साह देखने को मिला। कपड़ों, जूतों, स्मिजिनेटर, एयरकंडीशनर और वॉशिंग मशीन जैसे उत्पादों की बिक्री में पिछले साल के मुकाबले 20 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई। सरकारी बैंकों सहित कई कम्पनियाँ और निर्माता उपभोक्ताओं को लुभावनी छूट से भी लाभांशित कर रहे हैं। दुकानदारों ने भी आकर्षित दंगा से दुकानों को सजाना शुरू कर दिया है, ताकि अच्छा व्यापार हो सके। रेडसीरस्ट्रेटजी कंसल्टंट्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत का ऑनलाइन खुदरा बाजार 2०26 में 9० अरब अमेरिकी डॉलर के पार पहुंचने का अनुमान है। इसमें सालाना 22–24 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज होने की उम्मीद है, जो पांच साल में सबसे तेज होगी। इस वृद्धि का प्रमुख कारण मोबाइल फोन के बजाय किराना जैसे रोजमर्रा की जरूरतों वाले उत्पादों की बढ़ती मांग है। विश्लेषण के अनुसार ई-कॉमर्स सकल वस्तु मूल्य (जीएसपी) 2०26 की पहली छमाही में सालाना आधार पर लगभग 25 प्रतिशत बढ़कर लगभग 38 अरब डॉलर हो गया, जो चार वर्षों में इसका सबसे मजबूत छमाही प्रदर्शन है। उपभोक्ता ऑनलाइन व्यापार से खुश नजर आ रहे हैं उन्हें बाजार की धकमपेल से छूटकारा मिल रहा है। ऑनलाइन सेल में सामान सस्ता जरूर मिल रहा है मगर उपभोक्ता को सावधानी रखनी पड़ेगी क्योंकि ठगी करने वाले गिरोह भी सक्रीय हो गए हैं। जो भोले भले लोगों को सस्ते माल के चक्कर में फंसा कर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। ऐसे में लोगों ने सतर्कता नहीं रखी तो सस्ते में माल खरीदना महंगा भी पड़ सकता है।

—**अतिथि संपादक, बाल मुकुन्द ओझा, वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार**

राशिफल शनिवार 31 अक्टूबर, 2०26
कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, शनिवार, विक्रम संवत–2०8३, आर्द्र नक्षत्र प्रातः 7:12 तक, सिद्ध योग सायं 5:३2 तक, वणिज करण सायं 4:58 तक, चन्द्रमा रात्रि 12:०1 से कर्क राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह आज रविवयो प्रातः 7:12 से रात्रि 5:4० तक रहेगा। भद्रा सायं 4:58 से रात्रि 3:55 तक है। गुरू मघा सिंह राशि में दिन 12:०4 पर प्रवेश करेगा। आज इन्दिरा गांधी पुण्य दिवस है।
श्रेष्ठ चौघड़िया– शुभ 8:०2 से 9:25 तक, चर 12:1० से 1:33 तक, लाभ-अमृत 1:33 से 4:19 तक।
राहुकाल– 9:०0 से 1०:3० तक, सूर्योदय 6:39, सूर्यास्त 5:41

मेघ	सिंह	धनु
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरिपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।	आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संपातित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।	परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।
वृष	कन्या	मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।	व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।
मिथुन	तुला	कुंभ
मन: स्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव दूर होगा। आज आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।	परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक परेशानियाँ दूर होने लगेंगी। अटूट हुए कार्य बनने लगेंगे।	परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक आर्थिक परेशानियाँ दूर होने लगेंगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और मानसिक तनाव बना रहेगा।	चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनने का कार्य बिगड़ रहेगी। यात्रा में परेशानी हो सकती है।	घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

संपादकीय

स्वच्छ मतदाता सूची, सशक्त लोकतंत्र का आधार



भागीरथ चौधरी

लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत जनता का विश्वास है और इस विश्वास की बुनियाद निष्पक्ष चुनाव व्यवस्था पर टिकी होती है। चुनाव केवल मतदान का एक दिन नहीं, बल्कि एक लंबी संवैधानिक प्रक्रिया है, जिसकी शुरुआत मतदाता सूची की शुद्धता से होती है। यदि मतदाता सूची में मृत व्यक्तियों के नाम दर्ज हों, एक ही व्यक्ति का नाम कई स्थानों पर हो अथवा स्थायी रूप से स्थानांतरित हो चुके लोगों के नाम भी सूची में बने रहें, तो चुनाव की विश्वसनीयता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए निर्वाचन आयोग द्वारा विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया संचालित की जा रही है। यह किसी राजनीतिक दल के हित या विरोध का विषय नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की अधिक पारदर्शी, विश्वसनीय और मजबूत बनाने की संवैधानिक पहल है।

यह समझना जरूरी है कि मतदाता सूची का शुद्धिकरण किसी का मताधिकार छीनने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि प्रत्येक पात्र नागरिक के मताधिकार की रक्षा करने का प्रयास है।

संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत निर्वाचन आयोग को चुनावों के संचालन और मतदाता सूची के प्रबंधन की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं अनुच्छेद 326 वयस्क भारतीय नागरिकों के मताधिकार का आधार प्रदान करता है। इस प्रकार एसआईआर संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। एसआईआर की प्रक्रिया को केवल सरकारी अधिकारियों की कवायद मानना उचित नहीं होगा। इसमें बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) घर-घर जाकर मतदाताओं का सत्यापन करते हैं। इसके साथ ही राजनीतिक दलों द्वारा नियुक्त बूथ लेवल एजेंट (बीएलए) भी प्रक्रिया पर नजर रखते हैं। उपलब्ध सामग्री के अनुसार, देशभर में इस प्रक्रिया में लगभग 9 लाख से अधिक मतदान केंद्रों और 11 लाख से अधिक सरकारी कार्मिकों की भागीदारी रही है। भाजपा और कांग्रेस सहित विभिन्न राजनीतिक दलों के लाखों अधिकृत प्रतिनिधियों ने भी इसमें सहभागिता की है।

इसका स्पष्ट अर्थ है कि मतदाता सूची की जांच और सुधार की प्रक्रिया में राजनीतिक दलों की भी गिरानी का अवसर उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त प्रारूप मतदाता सूची के प्रकाशन के बाद दावे और आपत्तियां दर्ज कराने की व्यवस्था है। किसी नाम को हटाने के लिए निर्धारित कानूनी प्रक्रिया का पालन करना आवश्यक है। संबंधित व्यक्ति को नोटिस, सुनवाई और अपील का अवसर भी मिलता है। इसलिए यह कच्चा उचित नहीं कि एसआईआर में किसी पात्र मतदाता का नाम मनमाने ढंग से हट गया जा सकता है। एसआईआर को लेकर एक बड़ा भ्रम यह फैलाया गया कि इस प्रक्रिया के माध्यम से लगभग 13 करोड़

मतदाताओं के नाम सीधे काट दिए गए। ये नाम प्रारूप सूची तैयार करते समय अनुपस्थित, स्थायी रूप से स्थानांतरित, मृत अथवा दोहरे पंजीकरण की श्रेणी में चिन्हित किए गए थे। इनमें लगभग 2.89 करोड़ मृत और 1.०1 करोड़ दोहरे पंजीकरण वाले मतदाता बताए गए हैं। शेष नामों की भी निर्धारित प्रक्रिया के तहत जांच की जानी है।

दस्तावेज में दिए गए आंकड़ों के अनुसार, दो करोड़ से अधिक लोगों ने फॉर्म–6 के माध्यम से मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करया। इससे स्पष्ट होता है कि एसआईआर का उद्देश्य केवल त्रुटियां दूर करना नहीं, बल्कि पात्र मतदाताओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जोड़ना है। बांग्लादेश सहित किसी भी देश से अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने वाले विदेशी नागरिकों को भारतीय नागरिकों के लिए निर्धारित मताधिकार का लाभ नहीं मिलना चाहिए। हालांकि, किसी व्यक्ति के विरुद्ध केवल सहदे के आधार पर कार्रवाई उचित नहीं है। उसकी नागरिकता और पात्रता का निर्धारण कानून के अनुरूप सत्यापन तथा उचित सुनवाई के बाद ही होना चाहिए। एसआईआर जैसी प्रक्रिया इस दिशा में एक व्यवस्थित और संस्थागत व्यवस्था उपलब्ध करा सकती है। इससे एक ओर पात्र भारतीय नागरिकों के मताधिकार की रक्षा होगी, वहीं दूसरी ओर फर्जी और अपात्र पंजीकरण पर प्रभावी अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।

यह भी जानना जरूरी है कि विशेष गहन पुनरीक्षण भारतीय चुनाव व्यवस्था में पहली बार नहीं हो रहा है। स्वतंत्रता के बाद 1952–56, 1957, 1९61, 1९65–66, 1९83–84, 1९87–

दस्तावेज में दिए गए आंकड़ों के अनुसार, दो करोड़ से अधिक लोगों ने फॉर्म–6 के माध्यम से मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करया। इससे स्पष्ट होता है कि एसआईआर का उद्देश्य केवल त्रुटियां दूर करना नहीं, बल्कि पात्र मतदाताओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जोड़ना है। बांग्लादेश सहित किसी भी देश से अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने वाले विदेशी नागरिकों को भारतीय नागरिकों के लिए निर्धारित मताधिकार का लाभ नहीं मिलना चाहिए। हालांकि, किसी व्यक्ति के विरुद्ध केवल सहदे के आधार पर कार्रवाई उचित नहीं है। उसकी नागरिकता और पात्रता का निर्धारण कानून के अनुरूप सत्यापन तथा उचित सुनवाई के बाद ही होना चाहिए। एसआईआर जैसी प्रक्रिया इस दिशा में एक व्यवस्थित और संस्थागत व्यवस्था उपलब्ध करा सकती है। इससे एक ओर पात्र भारतीय नागरिकों के मताधिकार की रक्षा होगी, वहीं दूसरी ओर फर्जी और अपात्र पंजीकरण पर प्रभावी अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।

यह भी जानना जरूरी है कि विशेष गहन पुनरीक्षण भारतीय चुनाव व्यवस्था में पहली बार नहीं हो रहा है। स्वतंत्रता के बाद 1952–56, 1९57, 1९61, 1९65–66, 1९83–84, 1९87–

सर्वोच्च न्यायालय ने भी 27 मई 2०26 के अपने निर्णय में एसआईआर प्रक्रिया की वैधानिकता को बरकरार रखा है। यह इस बात को रेखांकित करता है कि मतदाता सूची की शुद्धता चुनावी लोकतंत्र का अनिवार्य आधार है। एसआईआर का एक सकारात्मक पक्ष नए मतदाताओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जोड़ना भी है। आज जब भारत दुनिया

अखंड भारत की एकता के शिल्पी सरदार वल्लभभाई पटेल के संकल्प, एक भारत – श्रेष्ठ भारत – आत्मनिर्भर भारत, को साकार करने का अवसर

राष्ट्रीय एकता दिवस, (31 अक्टूबर) पर विशेष....



डॉ. गोरधन लाल शर्मा

राष्ट्रीय एकता दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि अखंड भारत की आत्मा को नमन करने का दिवस है। यह वह अवसर है, जब हम स्वतंत्र भारत की एकता, अखंडता और राष्ट्रनिर्माण के शिल्पी लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के अदम्य संकल्प, दूरदर्शिता और संघटन कौशल को स्मरण करते हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद विखरी हुई रियासतों को एक सूत्र में पिरोकर भारत को उसकी भौगोलिक और राष्ट्रीय एकता प्रदान की। गुजरात में नर्मदा नदी के तट पर स्थित, 182 मीटर ऊँची, दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी केवल स्टील और कंक्रीट से बनी एक स्मारक नहीं अपितु यह उस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है जिसने भारत को उसकी क्षैय्य आत्मा दी। यह उन मूल्यों की याद दिलाता है जो हमें एक राष्ट्र के रूप में जोड़ते हैं। हर साल 31 अक्टूबर को राष्ट्र

अपने लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि देने के लिए रुकता है। उनकी दूरदर्शिता, साहस और कूटनीतिक कौशल ने एक खंडित उपमहाद्वीप को एक अखंड देश में बदल दिया। इस दिन को एकता दिवस या राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो न केवल पटेल के नेतृत्व को बल्कि विविधतापूर्ण होते हुए भी अविभाज्य भारत के चिरस्थायी विचार को दृष्टिबूट है। सरदार पटेल का मूलमंत्र ‘एक भारत, श्रेष्ठ भारत’ का विचार आज भी हमारा मार्गदर्शक बना हुआ है। यह हमें याद दिलाता है कि भारत की महानता समानता में नहीं बल्कि साझा मूल्यों और पारस्परिक सम्मान के माध्यम से अनगिनत मतभेदों को एक साथ रखने की उसकी क्षमता में निहित है।

जब देश में अंग्रेजों की फूट डालो-राज करो की नीति का जहर घोल रहे थे, उस महत्वपूर्ण क्षण में सरदार पटेल राष्ट्रीय एकीकरण के सूत्रधार के रूप में आगे आए। दृढ़ता और कूटनीति के अद्भुत मिश्रण से, उन्होंने अधिकांश शासकों को भारत में विलय के लिए राजी कर लिया और विरोध करने वालों से निर्णायक रूप से समर्पण करवा दिया। हैदराबाद, जुनागढ़ और अन्य दुर्गम क्षेत्रों से निपटने में उनके संयम, चातुर्य और दृढ़ इच्छाशक्ति का संगम देखने को मिला। सरदार पटेल की सफलता केवल प्रशासनिक ही नहीं थी, यह दूरदर्शी भी थी।

सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। इसके सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र के सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आ न करता है।

हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक रोजमर्रा की जिम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें, विविधता का सम्मान कैसे करें और राष्ट्र को स्वार्थ से ऊपर कैसे रखें। सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें एक अखंड भारत दिया। इसे सशक्त, समावेशी और जीवंत बनाए रखने का दायित्व हम पर है। एकता दिवस की भावना हमें याद दिलाती है कि केवल एक अखंड भारत ही वास्तव में एक महान भारत, एक भारत, महान भारत बन सकता है। सरदार पटेल का एकता का दृष्टिकोण मजबूत संस्थाओं पर उनके जोर से जुड़ा हुआ था। अखिल भारतीय

सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। इसके सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र के सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आ न करता है।

हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक रोजमर्रा की जिम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें, विविधता का सम्मान कैसे करें और राष्ट्र को स्वार्थ से ऊपर कैसे रखें। सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें एक अखंड भारत दिया। इसे सशक्त, समावेशी और जीवंत बनाए रखने का दायित्व हम पर है। एकता दिवस की भावना हमें याद दिलाती है कि केवल एक अखंड भारत ही वास्तव में एक महान भारत, एक भारत, महान भारत बन सकता है। सरदार पटेल का एकता का दृष्टिकोण मजबूत संस्थाओं पर उनके जोर से जुड़ा हुआ था। अखिल भारतीय

सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। इसके सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र के सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आ न करता है।

हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक रोजमर्रा की जिम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें, विविधता का सम्मान कैसे करें और राष्ट्र को स्वार्थ से ऊपर कैसे रखें। सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें एक अखंड भारत दिया। इसे सशक्त, समावेशी और जीवंत बनाए रखने का दायित्व हम पर है। एकता दिवस की भावना हमें याद दिलाती है कि केवल एक अखंड भारत ही वास्तव में एक महान भारत, एक भारत, महान भारत बन सकता है। सरदार पटेल का एकता का दृष्टिकोण मजबूत संस्थाओं पर उनके जोर से जुड़ा हुआ था। अखिल भारतीय

सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। इसके सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र के सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आ न करता है।

हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक रोजमर्रा की जिम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें, विविधता का सम्मान कैसे करें और राष्ट्र को स्वार्थ से ऊपर कैसे रखें। सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें एक अखंड भारत दिया। इसे सशक्त, समावेशी और जीवंत बनाए रखने का दायित्व हम पर है। एकता दिवस की भावना हमें याद दिलाती है कि केवल एक अखंड भारत ही वास्तव में एक महान भारत, एक भारत, महान भारत बन सकता है। सरदार पटेल का एकता का दृष्टिकोण मजबूत संस्थाओं पर उनके जोर से जुड़ा हुआ था। अखिल भारतीय

सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। इसके सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र के सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आ न करता है।

हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक रोजमर्रा की जिम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें, विविधता का सम्मान कैसे करें और राष्ट्र को स्वार्थ से ऊपर कैसे रखें। सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें एक अखंड भारत दिया। इसे सशक्त, समावेशी और जीवंत बनाए रखने का दायित्व हम पर है। एकता दिवस की भावना हमें याद दिलाती है कि केवल एक अखंड भारत ही वास्तव में एक महान भारत, एक भारत, महान भारत बन सकता है। सरदार पटेल का एकता का दृष्टिकोण मजबूत संस्थाओं पर उनके जोर से जुड़ा हुआ था। अखिल भारतीय

सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। इसके सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र के सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आ न करता है।

हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक रोजमर्रा की जिम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें, विविधता का सम्मान कैसे करें और राष्ट्र को स्वार्थ से ऊपर कैसे रखें। सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें एक अखंड भारत दिया। इसे सशक्त, समावेशी और जीवंत बनाए रखने का दायित्व हम पर है। एकता दिवस की भावना हमें याद दिलाती है कि केवल एक अखंड भारत ही वास्तव में एक महान भारत, एक भारत, महान भारत बन सकता है। सरदार पटेल का एकता का दृष्टिकोण मजबूत संस्थाओं पर उनके जोर से जुड़ा हुआ था। अखिल भारतीय

सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। इसके सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र के सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आ न करता है।

हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक रोजमर्रा की जिम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें, विविधता का सम्मान कैसे करें और राष्ट्र को स्वार्थ से ऊपर कैसे रखें। सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें एक अखंड भारत दिया। इसे सशक्त, समावेशी और जीवंत बनाए रखने का दायित्व हम पर है। एकता दिवस की भावना हमें याद दिलाती है कि केवल एक अखंड भारत ही वास्तव में एक महान भारत, एक भारत, महान भारत बन सकता है। सरदार पटेल का एकता का दृष्टिकोण मजबूत संस्थाओं पर उनके जोर से जुड़ा हुआ था। अखिल भारतीय

सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। इसके सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र के सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आ न करता है।

हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक रोजमर्रा की जिम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें, विविधता का सम्मान कैसे करें और राष्ट्र को स्वार्थ से ऊपर कैसे रखें। सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमें एक अखंड भारत दिया। इसे सशक्त, समावेशी और जीवंत बनाए रखने का दायित्व हम पर है। एकता दिवस की भावना हमें याद दिलाती है कि केवल एक अखंड भारत ही वास्तव में एक महान भारत, एक भारत, महान भारत बन सकता है। सरदार पटेल का एकता का दृष्टिकोण मजबूत संस्थाओं पर उनके जोर से जुड़ा हुआ था। अखिल भारतीय

सरदार पटेल की सांझी सांस्कृतिक विरासत को इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह देश की संरचना, देश की सिविल सेवाओं में, इसके संघीय ढाँचे में और इसके राष्ट्रीय चरित्र में समाहित है। इसके सार्वजनिक जीवन में उनका अनुशासन, कर्तव्य और राष्ट्रहित पर हमेशा फोकस रहता था जो आज भी हमारे सार्वजनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। एकता दिवस मनाने का अर्थ है राष्ट्रवाद के उस विचार का उत्सव मनाना जो जाति, पंथ, भाषा या क्षेत्र के सभी बाधाओं से परे है। यह प्रत्येक नागरिक से संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर भारत के व्यापक आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध होने का आ न करता है।

हर साल इस दिन को मनाते हुए हमें याद रखना चाहिए कि एकता विरासत में नहीं मिलती, इसे पोषित करना होता है। यह एक र